Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

50

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

केतनकुमार जोशी

रिसर्च स्कोलर, हिन्दी, सुरेन्द्रनगर युनिवर्सिटी, वढवान शहर

सारांश

नासिरा शर्मा का जन्म १९४८ में इलाहाबाद शहर में हुआ। उन्होंने फारसी भाषा और साहित्य में एम. ए. किया। हिन्दी उर्दू, अंग्रेज़ी , फारसी एवं पश्तो भाषाओं पर उनकी गहरी पकड़ है। वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य कला व संस्कृति विषयों की विशेषज्ञ हैं। इराक़, अ़फ़गानिस्तान, सीरिया, पाकिस्तान व भारत के राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ उन्होंने साक्षात्कार किये, जो बहुचर्चित हुए। इनके साक्षात्कार से समाज के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है । युद्धबन्दियों पर जर्मन और फ्रेंच दूरदर्शन के लिए बनी फिल्म में महत्त्वपूर्ण योगदान।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों पर आधारित इस शोधपत्र के अन्तर्गत आधुनिक हिन्दी कथा - साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर एवं वरिष्ठ साहित्यकार नासिरा शर्मा द्वारा विरचित उपन्यासों को अध्ययन का विषय बनाया है । नासिरा शर्मा उन विरले रचनाकारों में से एक हैं जिनकी हर कृति का कैनवास बहुत विराट है। इनके उपन्यासों में गहरे शोध की छाया है। साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित एवं किस्सागोई के फ़न में माहिर नासिरा जी के उपन्यासों में नए-पुराने रिश्तों की दास्तान है, लुप्त होती संवेदनाओं की पड़ताल है, वैश्विक परिदृश्य में समाज की बंदिशों में जकड़ी हुई इंसानियत की चीख है तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक तंतुओं के ताने-बाने को गहराई समझने का सफल प्रयास है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

संकेताक्षर:

1. आमुख

"लेखन का अर्थ केवल आपबीती कहना या अपना सुख-दर्द उड़ेलना या दोषारोपण कर अपना क्रोध निकालना नहीं होता है। बल्कि उसे कलात्मक ढंग से इस तरह कहना होता है कि वह आपकी आपबीती न लगकर जगबीती लगे ।"

कथाकार नासिरा शर्मा की आत्मानुभूतिपरक इस उक्ति के अनुसार लेखक की लेखकीय प्रतिभा समाजोपयोगी व प्रभावशाली सृजन का आधार बनती है। एक संवेदनशील लेखक की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा जब स्वर्णमय कलेवर से आवृत्त मिथ्या के भीतर स्थित अन्तः सत्ता का साक्षात्कार करती है तब वह लेखक की संवेदनामूलक अजस्र काव्यधारा के रूप में प्रस्फुटित हो उठती है। चिंतन और सृजन के सहज प्रस्फुटन की इस प्रक्रिया में रचनाकार मानव - हृदय से एकाकार होकर उसकी संवेदनाओं को महसूस करता है तथा उसके हृदय की गहराईयों तक जाकर व उसकी पीड़ाओं को यथोचित समाधान की दिशा देकर जीवन को आनन्दानुभूति से परिपूर्ण कर देता है और वस्तुतः सृजन का यही लक्ष्य है। रचनाकार की हृदयानुभूति की शब्दार्थरूप सम्यक् अभिव्यक्ति सकल समाज के मूल स्वरूप को, उसकी पीड़ा को उसके आचार-विचारों को, मनोभावों को व संवेदनाओं को प्रतिबिम्बित करती है, उनको समाधान की दिशा प्रदान करती है तथा भटकाव से हटाकर ध्येय मार्ग की ओर उन्मुख करती है। साथ ही रचना - वैशिष्ट्य भी स्वतः साकार हो उठता है। इसलिए 'साहित्य समाज का दर्पण है' यह उक्ति पूर्णतः सत्य है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों पर आधारित इस शोधपत्र के अन्तर्गत आधुनिक हिन्दी कथा - साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर एवं वरिष्ठ साहित्यकार नासिरा शर्मा द्वारा विरचित उपन्यासों को अध्ययन का विषय बनाया है ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

2. उपन्यास का महत्त्व

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यास को दिया जा सकता है, क्योंकि हिन्दी में इस विधा का श्रीगणेश अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ। सन् 1853 ई. में वंशीधर द्वारा थामस डे के लोकप्रिय उपन्यास 'सेण्डफोर्ड एण्ड मर्टन का अनुवाद किया गया तथा 1879 ई. में डॉ. जानसन के उपन्यास 'रासेलास' का भी हिन्दी में अनुवाद किया गया । हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के संबंध में विद्वानों में मतभेद रहा है। इस संबंद्ध में श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत 'भाग्यवती' (सन् 1877 ई.) तथा लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा गया 'परीक्षा गुरू' (सन् 1882 ई.) इन दो उपन्यास का नाम लिया जाता है । परन्तु 'परीक्षा गुरू' को ही अधिकांश विद्वान् हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। प्रेमचन्द को हिन्दी उपन्यासकारों में केन्द्र बिन्दु मानते हुए हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम को निम्न तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं-

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास
2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास
3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, भगवती चरण वर्मा, अमृतलाल नागर, बाबू वृन्दावल लाल वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, फणीश्वरनाथ 'रेणु', श्रीलाल शुक्ल, मोहन राकेश, मन्नु भण्डारी, उषा प्रियंवदा, भीष्म साहनी, मनोहर श्याम जोशी, धर्मवीर भारती आदि प्रमुख हैं।

आधुनिक उपन्यासों में विषय-वैविध्य के साथ-साथ शैलियों के भी विभिन्न रूप दिखाई पड़ते हैं। आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र - शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली आदि विविध शैलियों में उपन्यास लिखे जा रहे हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों की सूची में 'नासिरा शर्मा' एक प्रख्यात

एवं चर्चित उपन्यासकार के रूप में विराजमान हैं । नासिरा जी ने अपने 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी', 'सात नदियाँ एक समन्दर (बहिश्ते - ज़हरा)', 'ज़िन्दा मुहावरे', 'अक्षयवट', 'कुइयाँजान', 'ज़ीरो रोड़',

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

'पारिजात', 'अजनबी जज़ीरा', 'कागज की नाव', 'शब्द पखेरू' एवं 'दूसरी जन्नत' इन दर्जन भर उपन्यासों में अधुनातन विषयों में आबद्ध, आधुनिक भारतीय नारी, स्त्री-विमर्श, संघर्ष एवं विद्रोह, जीवन की गहन जकड़न और समय की विसंगतियाँ, कुण्ठा, मूल्यों का ह्रास, हिन्दु - मुस्लिम सौहार्द्रता, शोषण व अन्याय, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, ग्राम्य जीवन व पलायन की प्रवृत्ति, बाजारीकरण, सूचना व तकनीकी के दुरुपयोग व दुष्प्रभाव, जल की व्यथा, शुष्क होती संवेदना तथा अतीत व भविष्य के स्वरूप को अत्यन्त बारीकी से उकेरा है । उनके उपन्यासों में समकालीन समाज स्फटिक की भाँति प्रतिबिम्बित होता है। उनमें सर्वसाहित्यावगाही विलक्षण रचनाधर्मिता है ।

3. नासिरा शर्मा: संक्षिप्त परिचय

साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत एवं हिन्दी की सजग व सक्रिय कथाकार नासिरा शर्मा एक ऐसी शख्सियत है जो एक लम्बे अरसे से पश्चिम एशियाई समाज की समस्याओं व सामान्य जनमानस के दुःख-दर्द पर अनवरत लिखती आयी हैं। उनके लेखन में एक संवेदनशील रचनाकार और विचारक प्रतिबिम्बित होता है। साथ ही साहित्यिक मानदण्डों की गहरी समझ, सामाजिक समस्याओं से सरोकार और मानवीय मूल्यों की स्थापना के प्रति प्रतिबद्धता भी द्योतित होती है। इसी प्रतिबद्धता के कारण उनके अन्दर अन्तर्निहित लेखक देश - काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर बाहर से अनुभव बटोर लाता है तथा महिला लेखन से जुड़ी भ्रांतियों को चुनौति देता हुआ समकालीन लेखन की अगली पंक्ति में पूरे दम-खम के साथ आ खड़ा होता है।

नासिरा शर्मा का जन्म एक शिक्षित और सम्पन्न शिया मुस्लिम परिवार में 22 अगस्त, 1948 को उत्तरप्रदेश को साहित्यिक नगरी इलाहाबाद में हुआ । उनका पारिवारिक नाम 'नासिरा अली' है। शादी के उपरान्त अपने पति रामचन्द्र शर्मा के नाम से उपनाम 'शर्मा' ग्रहण कर 'नासिरा शर्मा' नाम पड़ा। उस समय इलाहाबाद हिन्दी साहित्यिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था। निश्चय ही परिवेशगत वैशिष्ट्य ने नासिरा में अन्तर्निहित साहित्यिक चेतना को विकसित करने में पोषण का कार्य किया । नासिरा शर्मा परिवार के कुल पाँच बच्चों में सबसे छोटी थी इसलिए उनका बचपन बहुत ही लाड़-प्यार में बीता । परिवार में पढ़े-लिखे लोगों के बीच उनकी शिक्षा घर पर ही प्रारम्भ हुई। वे अपनी माँ को ही अपना पहला

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

गुरु मानती है। उनकी प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा इलाहाबाद के कान्वेंट स्कूल में हुई तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1967 में उन्होंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से फारसी भाषा साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की । हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और पश्तो भाषा पर गहरी पकड़ होने के कारण ईरान उनके साहित्यिक शोध का विषय रहा है।

नासिरा शर्मा के सर्जनात्मक योगदान को हिन्दी साहित्य जगत् ने विविध पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा हिन्दी सेवा के लिए 'अर्पण सम्मान' (1987-88), 'संगसार' कहानी संग्रह के लिए मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार (1995), 'शाल्मली' एवं मध्यपूर्वी देशों पर लेखन के लिए बिहार शासन द्वारा महादेवी वर्मा पुरस्कार (1997), हिन्दी अकादमी, दिल्ली से इंडोरशन चिल्ड्रेन्स् राईटिंग अवार्ड (2000) और कीर्ति सम्मान, पत्रकार श्री प्रतापगढ़, यू.पी. (1980) आदि अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। आज जब सम्पूर्ण विश्व मुसलमानों को एक समस्या के रूप में देख रहा है, ऐसे समय में 27 जून, 2008 को लन्दन के हाउस ऑफ लार्ड्स में 14वें अन्तर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान से सम्मानित हिन्दी की प्रख्यात लेखिका नासिरा शर्मा की वैचारिक पुस्तक 'राष्ट्र और मुसलमान' भारतीय समाज को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के मार्ग की ओर ले जाती है।

वर्ष 2008 में उनहें उपन्यास 'कुइयाँजान' के लिए यू.के. कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। हिन्दी में वर्ष 2016 का साहित्य अकादमी का प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें उनके उपन्यास 'पारिजात' के लिए देकर साहित्य अकादमी ने भी उनकी लेखन - क्षमता व वैशिष्ट्य को प्रमाणित किया है।

4. प्रकाशित कृतियाँ

नासिरा शर्मा के अब तक ग्यारह उपन्यास, छह कहानी संकलन, तीन लेख-संकलन, सात पुस्तकों के फ़ारसी से अनुवाद, 'सारिका', 'पुनश्च' का ईरानी क्रांति विशेषांक, 'वर्तमान साहित्य' के महिला लेखन अंक तथा 'क्षितिजपार' के नाम से राजस्थानी लेखकों की कहानियों का सम्पादन। 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' के नाम से रिपोर्ताजों का एक संग्रह प्रकाशित। इनकी कहानियों पर अब तक 'वापसी', 'सरज़मीन' और 'शाल्मली' के नाम से तीन टीवी सीरियल और 'माँ', 'तडप', 'आया बसंत सखि','काली मोहिनी', 'सेमल का दरख्त' तथा 'बावली' नामक दूरदर्शन के लिए छह फ़िल्मों का निर्माण।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

1. सात नदियाँ एक समन्दर- १९८४
2. शाल्मली- १९८७
3. ठीकरे की मँगनी - १९८९
4. ज़िन्दा मुहावरे - १९९३
5. अक्षय वट - २००३
6. कुइयाँजान - २००५
7. ज़ीरो रोड - २००८
8. पारिजात - २०११
9. अजनबी जज़ीरा - २०१२
10. कागज़ की नाव - २०१४
11. अल्फ़ा- बीटा- गामा

5. सामाजिक चेतना

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित विविधरूपा सामाजिक चेतना पर बिन्दुवार निम्न प्रकार से विचार किया गया है-

- **धार्मिक चेतना**

समकालीन परिप्रेक्ष्य में धर्म के विषय में अपने विचार रखती हुईं नासिरा जी लिखती हैं कि "सदी के अन्त में खड़े होकर जब पिछले पचास वर्षों को देखती हूँ, तो लगता है कि 'समय' ने ही कई बार करवट बदली, आन्दोलनों के मुद्दे हल होकर भी आज दोबारा संघर्ष के लिए तैयार हैं। एक तरफ धर्म का उन्माद बढ़ करा है, तो उसी समाज में लोग विमुख हो रहे हैं। एक कदम आगे और दो कदम पीछे नहीं चल रहे हैं, बल्कि संतुलन की जगह सब कुछ तोड़ देने की जो प्रवृत्ति काम कर रही है, वह नया कुछ देने के बारे में न सोच पा रही है और न ही उसके पास नई कोई योजना है। उसका कारण भी है। जो शक्ति नया कुछ

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

लाने और बनाने में समर्थ है, उसका सारा बल समाज में उठते तूफान को शांत करने में लग जाता है । बँटवारे के बाद से लगातार फसादों का सिलसिला है, जो बंद होने का नाम नहीं ले रहा है। वह एकता, जो अंग्रेजों के विरोध में खड़ी हुई थी, अब एक-दूसरे को बर्बाद करने पर तुली नज़र आती है। बिना इस हक़ीक़त को समझे हुए कि जो दरिया - ए - सिंध एक बार पार चुका, वह हिंदुस्तानी बन बैठा और उसी अनेकता के ताने-बाने से बना हमारा समाज है।

- **आर्थिक चेतना**

हिन्दी भाषा की आधुनिक लेखिका एवं प्रख्यात व चर्चित उपन्यासकार नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में जहाँ आधुनिक युगबोध - सम्पन्न मनुष्य की मानसिकता को अभिव्यक्त किया है, वहीं आधुनिक परिवेश में लोक-जीवन की इस यथार्थ स्थिति का आकलन भी बखूबी किया है, जिसमें उसकी आर्थिक विषमताएँ, कुरीतियाँ, समस्याएँ, औद्योगिकीकरण और राजनीतिक विद्रूपताएँ समाविष्ट हैं। स्वतन्त्रता के बाद आम आदमी ने जो खुशहाल जीवन का स्वप्न देखा था वह स्वप्न ही रह गया। आर्थिक संसाधनों व पूँजी का विकेन्द्रीकरण आवश्यक था । किन्तु इसके विपरीत पूँजीका केन्द्रीकरण होता चला गया जिसके परिणामस्वरूप गरीबी व अमीरी का फांसला बढ़ता चला गया। सरकारी योजनाएँ कागजों पर सिमट कर दिखावा मात्र बनकर रह गयी थी । नासिरा जी अपने उपन्यासों के पात्रों के माध्यम से पूँजी के विकेन्द्रीकरण की बात कही है। अपने 'अक्षयवट' उपन्यास में लेखिका ने वर्तमान आर्थिक हालातों पर तीखा प्रहार करते हुए अनेक प्रश्न पाठकों के सामने प्रस्तुत किये हैं, जो आम इन्सानों की रोजमर्रा की जिन्दगी से सम्बन्धित हैं- "जवान लड़के गुण्डे क्यों बनते हैं? लड़कियाँ आत्महत्या क्यों करती हैं? दुकानदार डण्डी क्यों मारता है? ग्राहक मिलावट भरा सामान क्यों खरीदता है? जनता टैक्स क्यों देती है? नल क्यों सूखे हैं? चुनाव क्यों होता है ? हम वोट क्यों देते हैं? नौकरियाँ क्यों नहीं मिलती ? आर्थिक स्थिति बदहाल क्यों है?

- **समाजिक चेतना**

लेखिका ने समझाया है कि इस भटकाव की शिकार नई पीढ़ी को यदि माँ-बाप चाहें तो सही और गलत के मायने समझाकर, अच्छे संस्कार देकर पुनः रास्ते पर ला सकते हैं। पर इसके लिए बड़े-बुजुर्गों को

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

चाहिए कि वे अपनी औलादों के सामने आदर्श बनकर खड़े हों। जैसे 'कागज की नाव' उपन्यास में महजबीं अपनी बेटी महलका को समझाती हुई कहती है- "मैंने तुम्हें कई बातों में ग़लत मशविरे दिए, वह मेरी ममता की खुदगर्ज़ी थी। अब मेरी आँखें खुल चुकी हैं। जैसे मैंने अपनी गलती मान ली है, अब तुम भी मान लो और तौबा करो । तौबा का दरवाजा हमेशा खुला रहता है। उस नेक बंदे को जो तुम्हारे शौहर का बाप है उसकी ख़िदमत कर अपना कफ़्फ़ारा अदा करो वरना मैं तुम्हें दूध बख़्शने वाली नहीं हूँ, यह मेरा आखिरी फैसला है।

लेखिका ने मलक़ानूर के चरित्र के माध्यम से पाठकों को यह भी समझाया है कि समाज में पीढ़ीगत अन्तराल व सोच में परस्पर तालमेल बिठाना अत्यावश्यक है। नौजवान पीढ़ी नई सोच व ज़ज्बात लिए आगे बढ़ रही है और बुजुर्ग लोग पुरानी रीतियों व मर्यादाओं का हवाला देते हुए उन्हें बाँधना चाहते हैं। यहाँ चाहिए कि दोनों को एक-दूसरे के ज़ज्बातों, समय की जरुरतों व मर्यादाओं को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना होगा। नहीं तो मलकानूर की तरह परिवार नष्ट होते चले जायेंगे और हम एक-दूसरे को, समकालीन परिस्थितियों को दोष देते हर जायेंगे। पीढ़ीगत सोच को उजागर करती हुई लेखिका मलकानूर से कहलवाती है कि "हम नौ कक्षा पास हैं, अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़े और शादी यहां कर दी जहां कोई कुछ नहीं समझता।....छत की सीढ़ी वाले दरवाज़े में ताला डाल दिया। बाहर निकल ही नहीं पाती थी। छत पर भी जाना बंद हो गया। घर फ़ोन पर मां से बताया तो वह सास से बात करने के उलटे हमें समझाने लगीं। मायके जाने को कहा तो इनकार। इनका फोन आया तो बोले, हमारे मां-बाप की बात मानो। हमारा दुःख सुनने का किसी के पास टाइम न था । बच्चे को हमसे दूर रखती थीं। इस सबके बाद हम उस घर में रहकर क्या करते? शादी से पहले तय हुआ था हम आगे पढ़ाई जारी रखेंगे मगर अब कहते हैं हमें कुछ भी याद नहीं।.....देखा, कैसा घुटा- घुटा घर है ? कमरे की खिड़की जो गली की तरफ खुलती थी उसे चुनवा दिया। गर्मी और हब्स से बच्चा सारी रात रोता था तो भी हमें बातें सुनातीं - बच्चा पालना नहीं जानती, मायके वालों ने वायदा किया था कि मोटर साईकिल के साथ नक़द लाख रुपया देंगे मगर अस्सी हज़ार देकर कुड़क मुर्गी हो गए।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

संदर्भ

- जहिदा, जे. एस. और जोहरा, ए. जी. (2001). नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प
- जुने, के. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में निरुपति युग-बोध
- नमित कुमार शर्मा. (2021). नासिरा शर्मा ने अक्षयवट उपन्यास में चित्रित इलाहाबाद लोक संस्कृति एवं लोक सरोकार. Recent Researches In Social Sciences & Humanities, 8(1), 82-84.
- मीणा, प्रेमलता (2020). नासिरा शर्मा के उपन्यासो में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना. कोटा: कोटा विश्वविद्यालय
- यादव, आर. (1997). उपन्यास: स्वरूप और संवेदना. नई दिल्ही: वाणी प्रकाशन
- शैख़, एम. एस. एस. बी. (2009). नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध.
- सिन्हा, ए. (2010). नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श. गोवा: गोवा विश्वविद्यालय
- सोनिया. (2022). नारी चेतना के क्षेत्र में नासिरा शर्मा का योगदान. Eduzone: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal, 11(1), 242-247.